"धान"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- मध्यम से भारी दोमट चिकनी भूमि धान हेतु उपयुक्त होती है।
- ग्रीष्म ऋतु (मार्च–अप्रैल) में मिट्टी पलटने वाले हल से 3 वर्ष के अन्तराल पर गहरी जुताई करें।
- रबी फसल की कटाई के तुरन्त बाद कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 आड़ी खड़ी जुताई करें।
- वर्षा होने पर कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 जुताई करके पाटा चलाना चाहिए, जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाऐ।
- खेत के टुकड़ों के अनुरुप जल वितरण नाली बनायें।

उन्नत किस्में :–

- **सुगंधित धान** – पूसा सुगंधा–3, पूसा सुगंधा–4, पूसा सुगंधा–5, पूसा बासमती 1509, पूसा बासमती–1 (पूसा 1460)
- **सामान्य धान** – आई.आर.–36, आई.आर.–64, क्रांति, महामाया, एम.टी. यू.–1010

बोने का समय :–

- वर्षा प्रारंभ होते ही जून मध्य से जुलाई प्रथम सप्ताह तक बोनी का समय सबसे उपयुक्त होता है।
- रोपाई के लिये बीजों की बोआई रोपणी में जून के प्रथम सप्ताह से ही सिंचाई की उपलब्ध जगहों पर करना चाहिये।

बीज दर :–

- सीडड्रिल से बुआई करने पर 35 से 40 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बीजोपचार :–

- थायरम अथवा मेंकोजेब 2.5 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिये।

बुवाई की विधि :–

- धान की सीधी बुवाई कतारों में सीडड्रिल द्वारा करना चाहिए।
- कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. तथा बीज 2 से 3 से.मी. गहराई पर बोना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- खेतों में जैविक खादों जैसे गोबर की खाद/क्म्पोस्ट, नाडेप खाद, गोबर गैस खाद, नील हरित काई/ अजोला एवं पी.एस.बी. कल्चर का उपयोग किया जा सकता है।
- रासायनिक खाद में 80 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर व 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।
- सुपर फास्फेट एवं पोटाश की पूर्ण मात्रा का उपयोग आधार खाद के रुप में किया जाना चाहिये व यूरिया का उपयोग तीन किश्तों (बुआई के पहले, कंसे फूटने के समय एवं गभोट के प्रारंभ काल) में करना चाहिये। इसकी प्रथम किश्त में 20 प्रतिशत, द्वितीय किश्त में 50 प्रतिशत एवं तृतीय किश्त के रुप में 30 प्रतिशत मात्रा उपयोग की जानी चाहिये।
- पौधे की वानस्पतिक वृद्धि के आधार पर इसकी मात्रा कम की जा सकती है।
- भूमि में जस्ते की कमी होने पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हेक्टेयर का प्रयोग चार फसल बाद दोहरायें।

जल प्रबंधन :–

- बुवाई के पश्चात नमी की कमी होने पर हल्की सिंचाई करना चाहिए जिससे अंकुरण अच्छा होता है।
- खेत में हल्की दरार आने पर तुरन्त सिंचाई करें, जिससे वायु का संचार भूमि में अच्छी प्रकार से हो सके तथा खेत में पर्याप्त मात्रा में नमीं बनी रहे।
- फूल अवस्था एवं दाने भरने की अवस्था पर खेत में पानी का हल्का स्तर रखना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :–

- पेन्डीमिथलिन 38.7 प्रतिशत (स्टाम्प एक्सट्रा), 1750 मि.ली. प्रति हेक्टेयर

500–600 लीटर पानी में बुवाई के 2 से 3 दिन के अंदर प्रयोग करने से वार्षिक घास कुल एवं कुछ चौड़ी पत्ती वालें खरपतवारों की रोकथाम की जा सकती है।

- फसल बुवाई के 20 से 22 दिन बाद उगने वाली सभी सकरी पत्ती वालें खरपतवारों के नियंत्रण हेतु बिसपायरीबेक सोडियम (नॉमिनीगोल्ड) 250 ग्राम 500 से 600 ली. पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिये। या
- अजिम सल्फ्यूरॉन (सेगमेन्ट 50 डब्ल्यु.जी.) 70 ग्राम/हे. 500 से 600 ली. पानी में घोल बनाकर फसल बुआई के 20 –22 दिन बाद उगने वाले सकरी व चौड़ी पत्ती के खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है।

कीट नियंत्रण :–

- **तना छेदक** – कार्टप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी 25 कि.ग्रा. या फिप्रोनिल 0. 3 जी 15–20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर को खेत में मिलाए या क्विनालफास 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1000 मि.ली. से 1250 मि.ली. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।
- **गंधी बग** – क्विनालफॉस 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1000 मि.ली. से 1250 मि.ली. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।
- **आर्मी वर्म कीट** – क्विनालफॉस 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1250 मि.ली. प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **पत्ती लपेटक** – फ्लूबेन्डियामाइड 3.35 ई.सी. 250 मि.ली. प्रति हे. या कार्टप हाइड्रोक्लोराइड 50 एस.पी. 500–600 मि.ली. प्रति हे. छिड़काव करना चाहिये।
- **सफेद फुदका** – दानेदार कीटनाशी कार्बोफ्यूरॉन 3 जी 25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर या फिप्रोनिल 0.3 जी 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- छिडकाव हेतु 500–600 लीटर पानी प्रति हैक्टेयर उपयोग करें।

रोग नियंत्रण :–

- **पत्तियों का अंगमारी रोग** – ट्रायसायक्लोजोल फफूँदनाशी 1 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

- ट्रायसायक्लोजोल 75 एस.पी. का 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **पत्तियों का झुलसन रोग** – बोने से पहले कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा. बीज या ट्रायसायक्लोजोल फफूँदनाशी 1 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।
- हेक्साकोनाजोल 500 मि.ली. दवा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **धान का खैरा रोग** – रोग से बचाव हेतु 20 से 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर बुवाई से पहले प्रयोग करना चाहिये।

उपज :–

- धान की फसल से लगभग 40 से 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।